कलीसिया परिशिष्ट 13

[कलीसिया निर्माणकारी सेवकाई]

दुष्ट आत्माएँ और आध्यात्मिक युद्ध

बाइबल दुष्ट आत्माओं और आध्यात्मिक युद्ध के विषय में क्या सिखाती है? हम सीखेंगे कि बाइबल दुष्ट आत्माओं और उनके पतन, उनके विनाश करने के उद्देश्य, और मसीह द्वारा उनके निरस्त्रीकरण के विषय में क्या सिखाती है। अंत में हम सीखेंगे कि मसीहियों को दुष्ट आत्माओं के विरुद्ध अपने आध्यात्मिक युद्ध में क्या करना चाहिए।

बाइबल स्पष्ट रूप से सिखाती है कि 2000 वर्ष पहले, यीशु मसीह के पहले आगमन के दौरान शैतान को पहले से ही "बाध्य" कर दिया गया है और उसकी दुष्टात्माओं को "निहत्था" कर दिया गया है। शैतान को बांधना या उस पर मर्यादा लगाने को सुसमाचारों, मत्ती 12:28-30, लूका 10:17-20 और यूहन्ना। 12:31-32 में स्पष्ट रूप से सिखाया गया है और कुलुस्सियों 1:13, कुलुस्सियों 2:15, इब्रानियों 2:14 और 1 यूहन्ना 3:8 की पत्रियों में भी। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक शैतान के इस "बंधन" का वर्णन प्रकाशितवाक्य 12:7-9 और प्रकाशितवाक्य 20:1-3 में भविष्यसूचक चित्रों में करती है।

क. दुष्ट आत्माएँ और उनका पतन

खोजें और चर्चा करें। दुष्ट आत्माएँ कौन हैं?

1. स्वर्गदूतों की रचना।

पढ़ें कुलुस्सियों 1:16; इब्रानियों 1:14। जब परमेश्वर ने ब्रह्मांड का निर्माण किया, तो उन्होंने विभिन्न प्रकार के स्वर्गदूतों की रचना की, जिन्हें "प्रधान और अधिकारी" कहा गया (इफिसियों 6:12)। इन प्रधानों और अधिकारियों को मूल रूप से मसीह *द्वारा* और मसीह *के लिए* बनाया गया था, अर्थात, उन्हें यीशु मसीह को महिमा का योगदान देना चाहिए और उसके उद्देश्य में सेवा करनी चाहिए। "स्वर्गदूत काम करनेवाली आत्माएँ हैं जो उन लोगों की सेवा करने हेतु परमेश्वर द्वारा भेजे जाते हैं जो उद्धार प्राप्त करेंगे।" इसके कई खाते हैं कि सपने या दर्शन में स्वर्गदूत मसीहियों को कैसे दिखाई दिए, परन्तु गैर-मसीहियों को भी, कि वे उनके उद्धारकर्ता और परमेश्वर के रूप में यीशु मसीह की ओर मुड़ गए।

2. दुष्ट स्वर्गदूतों का पतन।

पढ़ें प्रकाशितवाक्य 12:4,9। जब प्रधान स्वर्गदूत शैतान पतित हुआ (उत्पत्ति 1:28 और 3:1 के बीच), तो उसने कई अन्य स्वर्गदूतों को अपने साथ मिलाकर पाप में डाल दिया। (प्रकाशितवाक्य 12:4; सीएफ। 2 पतरस 2:4)। तब से इन पतित स्वर्गदूतों को *शैतान के स्वर्गदूत* (प्रकाशितवाक्य 12:9), या *शैतान* या *दुष्ट आत्माएँ* (मत्ती 12:22-28,43-45) कहा जाता है। कई धर्मों के झूठे शिक्षक निरन्तर इन पतित स्वर्गदूतों या दुष्ट आत्माओं को *देवताओं* के रूप में संदर्भित करते हैं (1 कुरिन्थियों 8:4-5) और यहाँ तक कि उन्हें अपने *देवताओं* के रूप में पूजते हैं (1 कुरिन्थियों 10:20)। झूठा भविष्यवक्ता बिलाम ऐसे "देवताओं" (इब्रानी: एलोहिम) से परामर्श लेता है (गिनती 22:38) और इस्राएल के ईश्वरत्व को विशेष रूप से

शक्तिशाली मानता है जिसे सांत्वना देना आवश्यक है इससे पहले कि अभिशापों की धारा इस्राएल के विरुद्ध भेजी जा सके (गिनती 23:3-4)।

3. अच्छे और दुष्ट स्वर्गदूत।

पढ़ें 1 तीमुथियुस 5:21; इफिसियों 1:21-22; 6:12; 1 पतरस 3:22। प्रेरित पौलुस और पतरस अच्छे या चुने स्वर्गदूतों के अस्तित्व और अच्छे के लिए प्रभाव डालने की उनकी क्षमता से इनकार नहीं करते हैं। वे दुष्ट स्वर्गदूतों के अस्तित्व और दुष्टता के लिए प्रभाव डालने की उनकी क्षमता से भी इनकार नहीं करते हैं। हालाँकि, वे इस बात पर जोर देते हैं कि यीशु मसीह के अलावा किसी स्वर्गदूत के पास शक्ति नहीं है। ये सभी आत्मिक शक्तियाँ यीशु मसीह के प्रति पूर्ण समर्पण में हैं (इब्रानियों 1:4-8)!

पढ़ें कुलुस्सियों 2:9-10; रोमियों 8:35-39। अच्छे स्वर्गदूत उसमें कुछ भी नहीं जोड़ सकते हैं जो यीशु मसीह में पहले से मसीहियों के पास है और दुष्ट स्वर्गदूत कभी भी मसीहियों को परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकते हैं!

पढ़ें गलातियों 1:3-9। कुछ पतित स्वर्गदूत और झूठे भविष्यद्वक्ता "एक अलग सुसमाचार" (धार्मिक संदेश) का प्रचार करते हैं जो बाइबल के परमेश्वर की ओर से नहीं आता है। इन पतित स्वर्गदूतों और उनके साथियों को अनंतकाल के लिए दोषी ठहराया जाता है।

पढ़ें 1कुरिन्थियों 15:24-25; 2 पतरस 2:4; यहूदा 1:6। वह दिन निकट आ रहा है जब यहाँ तक कि दुष्ट स्वर्गदूतों के पास भी परमेश्वर के ब्रह्मांड में नुकसान करने या मसीहियों पर आक्रमण करने की क्षमता नहीं होगी! पतित स्वर्गदूतों या दुष्ट आत्माओं को बचाया नहीं जा सकता है और निश्चित रूप से अंतिम न्याय के दिन उनका न्याय किया जाएगा।

ख. दुष्ट आत्माओं के अलग-अलग उद्देश्य

1. शैतान पूर्ण संसार पर दावा करने का प्रयास करता है।

खोजें और चर्चा करें। संसार में शैतान के अधिकार और शक्ति की क्या सीमा है?

(1) शैतान केवल दुष्ट संसार का राजकुमार है।

पढ़ें लूका 4:5-6; यूहन्ना 8:44; यूहन्ना 12:31; 1 यूहन्ना 5:19; इफिसियों 2:2।

ध्यान दें। शैतान *झूठा दावा* करता है कि "संसार के सभी राज्य और उनके सभी अधिकार और वैभव" उसे दिए गए हैं और यह कि वह इसे जिसको भी चाहे दे सकता है (लूका 4:5-6)। यूहन्ना चेतावनी देता है कि "पूर्ण संसार दुष्ट के नियंत्रण में है" (1 यूहन्ना 5:19)। पौलुस कहता है कि शैतान "हवा के राज्य का शासक" है, "वह आत्मा जो अब काम पर है उन लोगों में जो अवज्ञाकारी हैं" (इफिसियों 2:2)। क्या बाइबल के ये तीन पद सिखाते हैं कि संसार के सभी राष्ट्र शैतान के पास है और वह पृथ्वी पर सभी लोगों को नियंत्रित करता है? क्या वे सिखाते हैं कि शैतान और उसकी दुष्ट आत्माएँ संसार में सबसे शक्तिशाली हैं?

नहीं! पूर्ण संसार और उसके लोग शैतान के पास नहीं है या वह उन्हें नियंत्रित नहीं करता है! जब यूहन्ना "संसार" की बात करता है, तो उसका अर्थ केवल दुष्ट संसार है, अर्थात् बुरे लोगों का पूरा समाज, जो

परमेश्वर से अलग किये गए हैं या जो संसार में बाइबल के परमेश्वर, यीशु मसीह और मसीहियों का विरोध करते हैं (यूहन्ना 15:18-25)।

संसार में मसीही शैतान के नहीं हैं और न ही उसके शासन और नियंत्रण के अधीन हैं (1 यूहन्ना 5:18), बल्कि इस संसार में यीशु मसीह के राज्य के हैं और वे राजाओं के राजा के शासन और नियंत्रण में हैं (सीएफ। मत्ती 13:37-39; यूहन्ना 18:36; 17:14-15; कुलुस्सियों 1:13)।

जब पौलुस शैतान को "हवा के राज्य के शासक" के रूप में बोलता है, तो उसका अर्थ है कि शैतान अपने दुष्ट स्वर्गदूतों के माध्यम से पृथ्वी पर केवल बुरे लोगों के समाज के भीतर और उसके आस-पास के वातावरण में अपने विनाशकारी कार्य को करने में सक्षम है। शैतान इस दुष्ट संसार का सीमित राजकुमार है (यूहन्ना 12:31)। शैतान और उसकी दुष्ट आत्माएँ केवल परमेश्वर की संप्रभु सत्ता और अनुमति की सीमा के भीतर ही कार्य कर सकती हैं।

इसलिए, जब शैतान दावा करता है कि वह राष्ट्रों का मालिक है और उनपर शासन करता है और यह कि उसके पास अधिकार और ताकत है कि वह उनका और उनके धन का निपटान कर सकता है, जैसा कि वह चाहता है, तो वह झूठा है। यीशु मसीह कहते हैं, "शैतान आरम्भ से ही एक हत्यारा है, एक झूठा और सभी झूठों का पिता है" (यूहन्ना 8:44)!

(2) यीशु मसीह पूर्ण ब्रह्मांड के राजा हैं।

पढ़ें मत्ती 28:18; यूहन्ना 13:3; इफिसियों 1:21-22; 1 पतरस 3:22; प्रकाशितवाक्य 1:5; 17:14; 19:16।

ध्यान दें। "इस वर्तमान युग के दौरान और आने वाले युग में, स्वर्ग में और पृथ्वी पर सारी शक्ति मसीह को दी गई है" (मत्ती 28:18)। 2 "परमेश्वर ने सभी चीजों को उसकी शक्ति के अधीन कर दिया है" (यूहन्ना 13:3)। "परमेश्वर ने उसे सभी नियम और अधिकार, शक्ति और प्रभुत्व, और वह प्रत्येक उपाधि जो दी जा सकती है, न केवल वर्तमान युग में, बल्कि आने वाले एक में भी, और परमेश्वर ने सभी चीजों को उसके पैरों के नीचे रखा और उसे प्रत्येक चीज का अधिकारी नियुक्त कर दिया" (इफिसियों 1:21-22), "स्वर्गदूत, प्रधानताएँ और शक्तियाँ उसके अधीन हैं" (1 पतरस 3:22)।

यीशु मसीह के पास ब्रह्मांड में और पृथ्वी पर हर किसी के ऊपर अधिकार और शक्ति है! यह यीशु मसीह नहीं है जो इस वर्तमान संसार में पीछे बैठता है, परन्तु शैतान और उसकी दुष्ट आत्माएँ। उपर्युक्त बाइबल पदों में केवल यही कहा गया है कि शैतान अभी भी दुष्ट लोगों, गैर-मसीहियों और अविश्वासियों के जीवन में दुष्टता के लिए एक शक्तिशाली प्रभाव का प्रयोग करता है जो शैतान को अपना स्वामी मानते हैं!

2. शैतान की दुष्ट आत्माएँ पृथ्वी पर कुछ क्षेत्रों को नियंत्रित करने का प्रयास करती हैं।

परिचय दें। बाइबल बताती है कि लोग कभी-कभी "क्षेत्रीय आत्माओं" पर कैसे विश्वास करते हैं। उनका मानना है कि पूर्ण संसार को कई क्षेत्रों में विभाजित किया गया है और प्रत्येक क्षेत्र को कुछ दुष्ट आत्माओं और उनके शैतान राजकुमार द्वारा नियंत्रित किया जाता है। इन दुष्ट आत्माओं और उनके शैतान राजकुमारों को प्रसन्न करने के लिए, गैर-मसीही मानते हैं कि उन्हें अपने क्षेत्र में प्रत्येक आत्मा की पूजा करनी होगी।

(1) संभावित क्षेत्र जिनमें दुष्ट आत्माएँ सक्रिय हैं।

खोजें और चर्चा करें। कुछ निश्चित क्षेत्र प्रतीत होते हैं जिन्हें शैतान की दुष्ट आत्माएँ नियंत्रित करने का प्रयास करती हैं?

- साम्राज्यों और देशों में दुष्ट आत्माएँ।

पढ़ें दानिय्येल 10:11-14,20-21। पुराने नियम में कहा गया है कि यीशु मसीह के प्रथम आगमन से पूर्व, फारस और यूनान के सांसारिक राज्यों या साम्राज्यों के शैतान राजकुमारों के बीच उनके आध्यात्मिक प्रतिनिधि थे। इन पदों से ऐसा लगता है कि दुष्ट आत्माओं और उनके शैतान राजकुमारों (उदाहरण के लिए: फारसी साम्राज्य का राजकुमार) की संसार के विशिष्ट देशों में बहुत रुचि थी (उदाहरण के लिए: फारस)।

- शहरों और कस्बों में दुष्ट आत्माएँ।

पढ़ें 2 राजाओं 17:29-31; प्रकाशितवाक्य 2:13। जब विभिन्न देशों के लोगों को सामरिया में बसाया गया था, तो प्रत्येक राष्ट्रीय समूह ने उन कस्बों में अपने स्वयं के देवताओं की पूजा की और उनकी सेवा की जहाँ वे बसे थे। प्रत्येक मूर्ति के अपने मंदिर और पुजारी थे। सामरी लोग मानते थे कि कुछ आत्माओं ने कुछ प्रदेशों को नियंत्रित किया है और क्षेत्रीय मूर्तियों और क्षेत्रीय मंदिरों के माध्यम से उस क्षेत्र में उनकी पूजा करने की आवश्यकता है।

नया नियम बताता है कि एक निश्चित समय में, शैतान का पिरगमुन शहर में अपना सिंहासन था। यह शहर एक पुराना शाही शहर था और उस समय एशिया प्रांत की रोमी सरकार की सीट थी। उस शहर में बहुत मूर्तिपूजा थी, जिसमें रोमी सम्राट की पूजा भी शामिल थी। इस प्रकार, उस शहर में, शैतान के पास लगभग अबाधित शक्ति थी और वह प्रतिशोध के साथ अपने बुरे काम का अभ्यास करता था। फिर भी, यीशु मसीह ने वहाँ रहने वाले मसीहियों को आश्वासन दिया कि वह अपने मुँह की तलवार से इन मूर्तिपूजकों के विरुद्ध लड़ रहा था! उसने कहा कि केवल अपने शब्दों को बोलने से, वह अपश्चातापी लोगों का न्याय करेगा और उनके झूठे शिक्षकों को मार डालेगा (प्रकाशितवाक्य 1:16; 2:12, 16; 19:15)। इन पदों से ऐसा लगता है कि दुष्ट आत्माओं को विशेष शहरों और कस्बों में बहुत रुचि है।

- मानव संस्कृतियों में दुष्ट आत्माएँ।

पढ़ें प्रकाशितवाक्य 18:2; 19:20; 20:10। "बाबुल शहर" मानव संस्कृति में व्यक्त शैतान की मसीही-विरोधी अनैतिक शक्ति का एक सर्वनाशपूर्ण चित्र है। शहर को *महान वेश्या* के रूप में वर्णित किया गया है (प्रकाशितवाक्य 17:1-5)। जब इस शहर का पतन होता है, यह शैतानों के लिए एक घर और प्रत्येक दुष्ट आत्मा के लिए एक अड्डे के रूप में वर्णित है (प्रकाशितवाक्य 18:2)। यह पद एक घोषणा है कि भविष्य में बाबुल का पतन इतना निश्चित है कि इसे ऐसे दर्शाया गया है जैसे कि यह पहले ही हो गया था! मसीह के दूसरे आगमन पर इसकी इतनी जल्दी और इतने निश्चित रूप से पतन और वीरानी होगी, कि यहाँ तक कि दुष्ट आत्माएँ भी नहीं बच पाएँगी! दुष्ट आत्माएँ, जैसे कि यह थीं, कैद हो जायेंगी या बाबुल के खंडहरों में फंस जाएँगी! बाइबल सिखाती है कि दुष्ट आत्माओं का न्याय किया जाएगा और अंतिम न्याय पर शैतान और उसके शैतान राजकुमारों के साथ मिलकर दंडित किया जाएगा! इन पदों से ऐसा लगता है कि शैतान राजकुमार और उनकी दुष्ट आत्माएँ कुछ मानव संस्कृतियों या राष्ट्रीय संस्कृतियों में बहुत रुचि रखते हैं।

कुरिन्थ में कुछ मसीही "आत्माओं के लिए उत्सुक थे" जो लोगों को कुछ आध्यात्मिक वरदान देने की क्षमता रखती थीं। (यूनानी लेख यह नहीं कहता है: "वे आध्यात्मिक वरदान पाने के लिए उत्सुक थे", परन्तु: "वे आत्माओं को पाने के लिए उत्सुक थे") (1 कुरिन्थियों 14:12)।

- क्षेत्रीय आत्माओं के रूप में दुष्ट आत्माएँ।

आज, कई जनजातियाँ अपनी *क्षेत्रीय आत्माओं* पर विश्वास करती हैं। बंजारे कभी भी अपने स्वयं के क्षेत्र के बाहर शिविर नहीं बनाते हैं, जब तक कि उन्होंने पहले उस स्थान की *आत्मा के मालिक* से अनुमति नहीं ली हो। बंजारे स्वयं उस जमीन के मालिक के रूप में विचार धारण नहीं करते हैं, परन्तु उनका मानना है कि वे केवल उसका उपयोग उसके सच्चे *आत्मा मालिकों* की अनुमति से कर रहे हैं। वे यह भी मानते हैं कि ये क्षेत्रीय आत्माएँ उनके क्षेत्र में रहते हुए एक प्रकार से उन्हें गोद ले लेती हैं। पापुआ न्यू गिनी में दलदल की प्रादेशिक आत्माओं को सबसे पहले आमंत्रित और सम्मानित किया जाता है इससे पहले कि दलदल के भीतर मगरमच्छों का शिकार किया जाए।

नया नियम इन दुष्ट आत्माओं को वास्तव में किसी भी क्षेत्र का *नियंत्रण* करते नहीं दिखाता है। यह केवल इन शैतानों को पृथ्वी पर कई स्थानों पर *सक्रिय* बताता है। इनका प्रमुख उद्देश्य इन सभी जगहों पर सुसमाचार के प्रचार और परमेश्वर की महिमा को रोकने का प्रयास करना है। हालाँकि, ये दुष्ट आत्माएँ मसीहियों को धरती पर किसी भी जगह में प्रवेश करने से नहीं रोक सकतीं। मसीह पहले से ही शैतान और उसकी दुष्ट आत्माओं (शैतानों) को अपने पहले आगमन पर बांध (सीमित) चुका है और प्रार्थना और मसीहियों की नियुक्तकार्य सेवकाई के माध्यम से इस वास्तविकता को लागू कर रहा है। जहाँ भी मसीही प्रार्थना करते हैं और सुसमाचार की घोषणा की जाती है, दुष्ट आत्माएँ (शैतान) लोगों और उस क्षेत्र पर से अपनी पकड़ ढीली कर देते हैं और परमेश्वर का राज्य पकड़ कर लेता है (मत्ती 12:29)!

(2) सभी क्षेत्र यीशु मसीह के संप्रभु नियंत्रण के अधीन हैं।

पढ़ें यशायाह 14:24,27; दानिय्येल 10:11-14,20-21।

खोजें और चर्चा करें। कौन पृथ्वी पर क्षेत्रों और वर्तमान और भविष्य की ऐतिहासिक घटनाओं को नियंत्रित करता है?

- परमेश्वर पृथ्वी पर प्रत्येक क्षेत्र को एक संप्रभु तरीके से नियंत्रित करता है।

हालाँकि ऐसा लगता है कि दुष्ट आत्माओं और उनके शैतान राजकुमारों ने कुछ क्षेत्रों को नियंत्रित करने का प्रयास किया है

(सीएफ। यशायाह 14:13-14), बाइबल स्पष्ट रूप से सिखाती है कि उन्होंने *वास्तव में कभी भी पूरे क्षेत्रों पर नियंत्रण* नहीं किया, उदाहरण के लिए बाबुल का संपूर्ण साम्राज्य, फारस का साम्राज्य या यूनान का। उन्होंने उन देशों में होने वाली प्रत्येक चीज को कभी नियंत्रित नहीं किया! उदाहरण के लिए, दानिय्येल बाबुल और फारस के साम्राज्यों में रहता था और सेवा करता था और वह कभी दुष्ट आत्माओं के नियंत्रण में नहीं था! हालाँकि कई गैर-मसीही और यहाँ तक कि कुछ मसीही मानते हैं कि उनका क्षेत्र दुष्ट आत्माओं और उनके शैतान-राजकुमारों द्वारा नियंत्रित किया जाता है और परमेश्वर द्वारा नहीं, बाइबल स्पष्ट रूप से सिखाती है कि यीशु मसीह में परमेश्वर एक संप्रभु राजा है जो पृथ्वी पर और संपूर्ण ब्रह्मांड में प्रत्येक क्षेत्र पर नियंत्रण रखता है। (भजन संहिता 2: 1-12; 24:1; 145: 13; 146:10; मत्ती 28:18)

- परमेश्वर पृथ्वी पर ऐतिहासिक घटनाओं को एक संप्रभु तरीके से नियंत्रित करता है।

गैर-मसीही अक्सर शैतानों के पदानुक्रम में विश्वास करते हैं जो पृथ्वी पर ऐतिहासिक घटनाओं को नियंत्रित करते हैं। उदाहरण के लिए, पुराने नियम के समय में, वे मानते थे कि फारस और यूनान के साम्राज्यों जैसे मजबूत देशों के पास शैतान राजकुमार थे जो कमजोर देशों की आध्यात्मिक शक्तियों की तुलना में मजबूत थे जैसे कि छोटा देश इस्राएल। परन्तु बाइबल स्पष्ट रूप से सिखाती है कि हवा में शैतानों का पदानुक्रम पृथ्वी पर राजाओं के पदानुक्रम की प्रतिकृति नहीं है! हालाँकि इस्राएल एक महत्वहीन राष्ट्र था और फारस और यूनान महान विश्व साम्राज्य थे, मीकाएल, इस्राएल का स्वर्गदूत राजकुमार फारस और यूनान के शैतान राजकुमारों की तुलना में अति मजबूत था! यह फारस और यूनान के शैतान राजकुमार नहीं थे, बल्कि हमारा संप्रभु परमेश्वर था जिसने फारस, यूनान और इस्राएल की ऐतिहासिक घटनाओं को नियंत्रित किया था!

बाइबल निरंतर सिखाती है कि यह परमेश्वर है जो एक संप्रभु तरीके से दुष्ट आत्माओं और उनके शैतान राजकुमारों को बाँधता और नष्ट करता है। उदाहरण के लिए, हमने पढ़ा कि शक्तिशाली अश्शूरियाई साम्राज्य के अश्शूरियाई राजा ने दावा किया कि अन्य राष्ट्रों के देवता अपने राष्ट्रों को उसकी पराक्रमी सेना से नहीं छुड़ा सकते। हालाँकि, जब राजा हिजकिय्याह और भविष्यवक्ता यशायाह ने प्रार्थना में बाइबल के परमेश्वर को पुकारा, तो परमेश्वर ने *केवल एक स्वर्गदूत* को भेजा जिसने शक्तिशाली अश्शूरियाई सेना (1,85,000 पुरुष) का पूर्ण रीति से सत्यानाश कर दिया (2 इतिहास 32:1-21; यशायाह 37:36; सीएफ। प्रकाशितवाक्य 12:7-9)!

- परमेश्वर पृथ्वी पर भविष्य की ऐतिहासिक घटनाओं को एक संप्रभु तरीके से प्रकट करता है।

परमेश्वर ने दानिय्येल को बताया कि हवा में आध्यात्मिक युद्ध पहले फारस के विरुद्ध और फिर यूनान के विरुद्ध निर्देशित होने जा रहा था, क्योंकि इनमें से प्रत्येक देश विश्व साम्राज्य के रूप में एक सीमित समय के लिए इस्राएल पर अधिकारी होंगे। इस्राएल को निर्वासन में परमेश्वर के लोगों के रूप में माना जाता था। हालाँकि, परमेश्वर के लोग रक्षाहीन लग रहे थे, उनके पास उनके पक्ष में परमेश्वर और परमेश्वर के सभी स्वर्गदूत थे (सीएफ। मत्ती 26:52)! हालाँकि, पृथ्वी पर संघर्ष इस प्रकार से संदेह पैदा करने के लिए होगा कि क्या परमेश्वर के लोग जीवित रह पाएँगे, दानिय्येल के लिए परमेश्वर का दर्शन दानिय्येल को यह दृढ़ आश्वासन देने के लिए था कि पृथ्वी पर स्थिति चाहे कितनी भी निराशाजनक हो जाए, पृथ्वी पर की सभी घटनाएँ हमेशा परमेश्वर के नियंत्रण में हैं। हवा में आध्यात्मिक युद्ध का परिणाम पहले से ही निर्धारित किया गया था!

3. दुष्ट आत्माएँ स्वयं को कुछ चीजों से जोड़कर लोगों को नष्ट करने का प्रयास करती हैं।

(1) दुष्ट आत्माएँ लोगों के शरीरों को नष्ट करने का प्रयास करती हैं।

खोजें और चर्चा करें। दुष्ट आत्माएँ लोगों के शरीरों और आत्माओं को नष्ट करने का प्रयास कैसे करती हैं?

पढ़ें मत्ती 4:23-24; 12:22; लुका 11:14; 13:11,16। कभी-कभी दुष्ट आत्माएँ *शारीरिक विकलांगता* का कारण बनती हैं।

हालाँकि सभी बीमारियाँ और शारीरिक अक्षमताएँ दुष्ट आत्माओं के कारण नहीं होती हैं (सीएफ। यूहन्ना 9:1-3), कुछ दुष्ट आत्माओं के पास कुछ लोगों को अंधा (मत्ती 12:22), बहरा और गूंगा (लुका 11:14) या अपंग (लुका 13:11,16) बनाने की शक्ति होती है।

पढ़ें मत्ती 12: 43-45; लुका 8:2,30। कभी-कभी दुष्ट आत्माएँ लोगों पर *कब्जा कर लेती हैं या उन पर आक्रमण करती हैं।* कुछ दुष्ट आत्माएँ कभी-कभी गैर-मसीहियों के शरीर में प्रवेश करती हैं (अर्थात, उन लोगों के जिनके अंदर पवित्र आत्मा वास नहीं करता है)। ऐसे लोगों को तब *शैतान-ग्रस्त* कहा जाता है। हालाँकि, दुष्ट आत्माएँ नया-जन्म पाए हुए मसीहियों पर आक्रमण करती हैं (इफिसियों 6: 10,16), वे कभी भी नया-जन्म पाए मसीही पर कब्जा नहीं कर सकतीं, क्योंकि "क्योंकि जो तुम में है, वह उस से जो संसार में है, बड़ा है" (1 यूहन्ना 4:4; सीएफ। मत्ती 12:43-45; सीएफ। यूहन्ना 10:28; 14:16-17)।

(2) दुष्ट आत्माएँ लोगों की आत्माओं (मनों, प्राणों) को नष्ट करने का प्रयास करती हैं।

खोजें और चर्चा करें। दुष्ट आत्माएँ लोगों की आत्माओं (मनों, प्राणों) को नष्ट करने का प्रयास कैसे करती हैं?

पढ़ें लूका 8:27-29,35; मरकुस 9:20-22 कभी-कभी दुष्ट आत्माएँ *आध्यात्मिक विकलांगता* का कारण बनती हैं। कुछ दुष्ट आत्माओं में कुछ लोगों को पागल बनाने की शक्ति होती है (लुका 8:27-29,35) या उन्हें आत्महत्या करने के लिए प्रेरित करती हैं (मरकुस 9:20-22)। हालाँकि, हमें यह स्पष्ट करना चाहिए कि सभी बीमारियाँ, पीड़ाएँ, शारीरिक अक्षमताएँ और मानसिक बीमारियाँ दुष्ट आत्माओं के कारण नहीं होती हैं, क्योंकि बाइबल स्पष्ट रूप से मत्ती 4:23-24 में इन दोनों के बीच अंतर करती है!

पढ़ें व्यवस्थाविवरण 32:16-17; भजन संहिता 106:34-39; 1 कुरिन्थियों 10:18-21। दुष्ट आत्माएँ लोगों के दिमाग और आत्माओं को नष्ट करने के लिए विशेष रूप से *मूर्तिपूजा* का उपयोग करती हैं! दुष्ट आत्माएँ मूर्तियों और इन मूर्तियों के लिए किए गए बलिदानों से स्वयं को जोड़ लेती हैं। इस प्रकार, मूर्तिपूजा वास्तव में दुष्ट आत्माओं की पूजा है!

पढ़ें 1तीमुथियुस 4:1-3; 1 यूहन्ना 4:1-6; 2 यूहन्ना 7-11। दुष्ट आत्माएँ लोगों के दिमाग और आत्माओं को नष्ट करने के लिए स्वयं को झूठे शिक्षकों और उनकी झूठी शिक्षाओं से जोड़ देती हैं! बाइबल कहती है, "कुछ (नाममात्र) मसीही (मसीही) विश्वास को त्याग देंगे और धोखा देनेवाली आत्माओं और शैतानों द्वारा बताई चीजों का पालन करेंगे।" दुष्ट आत्माएँ निश्चित रूप से धर्मों की झूठी शिक्षाओं, दर्शनों और दुनिया की विचारधाराओं में शामिल हैं। । दुष्ट आत्माएँ निश्चित रूप से झूठ और अपवाद में शामिल होती हैं जो अक्सर बड़े पैमाने पर मीडिया द्वारा फैलाए जाते हैं (यूहन्ना 8:44)। दुष्ट आत्माएँ शायद जानबूझकर गलत धारणाओं में भी शामिल हैं, जो कभी-कभी वैज्ञानिकों द्वारा बनाई जाती हैं।

पढ़ें लैव्यव्यवस्था 19:26,31; 20:6,27; व्यवस्थाविवरण 18:9-13। लोगों को नष्ट करने के लिए दुष्ट आत्माएँ स्वयं को प्रत्येक प्रकार की *गुह्यविद्या* से जोड़ लेती हैं! दुष्ट आत्माएँ गुह्यविद्या पर नियंत्रण रखती हैं, जैसे कि आग में लोगों का बलिदान करना, भविष्य बताना, भूतसिद्धि, शगुन चिन्हों की व्याख्या करना, जादू टोना, मंत्र मारना, माध्यम बनना और आत्माओं से संपर्क करना, मरे हुओं और राष्ट्रों के अन्य घृणित तरीकों से परामर्श लेना जो बाइबल के परमेश्वर को नहीं जानते हैं। शैतानवाद शैतान की पूजा है, जो आमतौर पर

सभी प्रकार की विद्रोही प्रथाओं के माध्यम से होती है, जैसे गुह्यविद्या, यौन अनैतिकता और हिंसक यातना और हत्या।

(3) दुष्ट आत्माएँ राजनीतिक उत्पीड़न, धार्मिक विकृति और नैतिक प्रलोभन द्वारा परमेश्वर के लोगों को नष्ट करने का प्रयास करती हैं।

खोजें और चर्चा करें। दुष्ट आत्माएँ कैसे परमेश्वर के लोगों को नष्ट करने का प्रयास करती हैं?

पढ़ें प्रकाशितवाक्य 16:13-14; 17:1-6। यूहन्ना तीन दुष्ट आत्माओं (शाब्दिक: तीन *अशुद्ध आत्माओं*) का वर्णन करता है जो अजगर, जानवर और झूठे भविष्यवक्ता के मुंह से निकलती हैं। वे राष्ट्रों के अगुवों को धोखा देने और उन्हें परमेश्वर के विरूद्ध करने के लिए चमत्कार करती हैं। ये दुष्ट आत्माएँ अपने घिनौने, घृणास्पद और प्रतिकारक चरित्रों को इंगित करने के लिए मेंढक के समान दिखती हैं। ये दुष्ट या अशुद्ध आत्माएँ शैतानी, नारकीय विचारों, योजनाओं, परियोजनाओं, विधियों और उद्यमों का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो नरक में पैदा होते हैं और स्वयं शैतान और उसके दो अभिकर्ताओं, जानवर और झूठे भविष्यवक्ता के माध्यम से लोगों के दिमाग में पेश किए जाते हैं। शैतान का तीसरा अभिकर्ता है महान वेश्या, बाबुल।

- "समुद्र से बाहर आया जानवर" शैतान की विरोधी सरकारों और उसके सताव को दर्शाता है

(प्रकाशितवाक्य 13:1-10), विशेष रूप से महान विश्व साम्राज्यों (राजनीतिक पृथकों के रूप में राष्ट्र) में (दानिय्येल 7:17) अपने राजाओं (सभी शासकों) (दानिय्येल 7:24) के साथ, जो मसीह के पहले से दूसरे आगमन तक की अवधि के दौरान एक दूसरे का अनुसरण करते हैं, 42 महीनों द्वारा प्रतीकित किए गए हैं (प्रकाशितवाक्य 13:5-7)। यह 3½ वर्ष की अवधि उस *समय की सीमांकित अवधि* का प्रतीक है जो मसीह के पहले आगमन से आरम्भ होती है (प्रकाशितवाक्य 12:5-6) और मसीह के दूसरे आगमन के साथ अचानक और अप्रत्याशित रूप से समाप्त होती है (प्रकाशितवाक्य 11:2-12)। "समुद्र" से आना इंगित करता है कि जानवर उग्र देशों के गर्जते समुद्र से निकलता है" (भजन संहिता 65:7; यशायाह 17:12; प्रकाशितवाक्य 17:15)। यह जानवर मसीह के दूसरे आगमन तक पूरे नए नियम की अवधि के दौरान शैतान का मसीही विरोधी राजनीतिक उत्पीड़नकर्ता (उत्पीड़क) है।

- "पृथ्वी में से जानवर" या "झूठा भविष्यद्वक्ता" शैतान के मसीही विरोधी ज्ञान, इसकी भ्रामकता और इसके अधिवक्ताओं को दर्शाते हैं

(प्रकाशितवाक्य 13:11-18), विशेष रूप से धर्म, विचारधारा, दर्शन और दुनिया के विज्ञानों में अपने अधिवक्ताओं के साथ मसीह के पहले से दूसरे आगमन की अवधि के दौरान। "पृथ्वी" से आना "स्वर्गीय प्रकृति और महत्व की कमी" (फिलिप्पियों 3:19) और "अनआत्मिक, शैतानी होना" (याकूब 3:14-15) इंगित करता है। पृथ्वी से बाहर आया जानवर उन सभी लोगों और संस्थानों को दर्शाता है, जो मसीही विरोधी धर्मों, विचारधाराओं, दर्शन और विज्ञान की वकालत करते हैं, जो मसीह के पहले से दूसरे आगमन के पूरे काल में मसीहियों को सताते हैं, समुद्र के बाहर जानवर के शासनकाल के 42 महीनों द्वारा प्रतीक होते हैं (प्रकाशितवाक्य 13:5,12-13)। "2" संख्या "साक्षी" या "वकालत और बचाव" इंगित करती है (व्यवस्थाविवरण 17:6; मत्ती 18:16; लूका 10:1)। झूठा भविष्यद्वक्ता, पूरे नए नियम की अवधि के दौरान से मसीह के दूसरे आगमन तक शैतान का मसीहि-विरोधी धार्मिक भ्रष्टाचारी (झूठा, धोखेबाज) है।
"महान वेश्या" या "बाबुल" शैतान की मसीहि-विरोधी दुनिया और उसके बहकावे को दर्शाते हैं,

विशेष रूप से उद्योग और वाणिज्य, व्यापार और वित्त, शिक्षा और न्याय, विलासिता और सुख, कला और खेल, और निश्चित रूप से प्रत्येक प्रकार के सांसारिक धर्म में भी (सीएफ। प्रकाशितवाक्य 18:2-3,20,22)। संक्षेप में, यह मसीह के पहले आगमन से दूसरे आगमन तक की अवधि के दौरान दुनिया के साम्राज्यों से जुड़ी शैतान की *मसीहि-विरोधी संस्कृति* का प्रतीक है। इन सभी बहकावों के माध्यम से, वह लोगों को लुभाने और बहकाने, लोगों को मूढ बनाने और अंधा करने को खोजती है, ताकि उन्हें परमेश्वर से दूर किया जा सके (सीएफ। प्रकाशितवाक्य 19:2)। "बाबुल" "पापी आदमी की तृष्णा, आँखों की वासना और उसने क्या किया और क्या करता है की डींग मारना", "दुनिया और उसकी चले जानी वाली इच्छाओं" के अवतार के रूप में विलासिता, मोहकता और व्यसन के केंद्र के रूप में देखी जाने वाली दुनिया का प्रतिनिधित्व करता है (1 यूहन्ना 2:16-17)। बाबुल, महान

वेश्या, शैतान का मसीही-विरोधी नैतिक प्रलोभक (परीक्षक) है जो मसीह के दूसरे आगमन तक पूरे नए नियम की अवधि में है।

पहली शताब्दी ई.स. के दौरान, सांसारिक बनने और मसीह का इनकार करने का प्रलोभन तीन दिशाओं से आया:

- तलवार, जंगली जानवरों, जलाकर हत्या, कारावास और रोमी न्यायालयों के सामने निरंतर आरोपों के साथ मसीही-विरोधी राजनीति के पक्ष से (प्रकाशितवाक्य 2:9-10,13; 3:9)।
- मसीही-विरोधी धर्म (झूठ बोलने वाले धर्म) की ओर से, जैसे कि सम्राट पूजा, प्रज्ञानवाद और रहस्य धर्म (प्रकाशितवाक्य 2:6,13-15)।
- मसीही-विरोधी संस्कृति (नैतिक मूल्यों) की ओर से, जैसे कि लैंगिक अनैतिकता के प्रलोभन के रूप में । लोगों को निरंतर अपनी सामाजिक पदवी को सुरक्षित बनाने और दुनिया के सुखों का आनंद लेने के लिए अन्यजातियों के अनैतिक पर्वों में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया गया था।

प्रत्येक युग में, मसीहियों को इस बात पर विचार करना चाहिए कि उनके समय में और उनके स्वयं के समाज के भीतर कौन और क्या मसीही-विरोधी राजनीति, मसीही-विरोधी धर्म और मसीही-विरोधी संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं!

यूहन्ना के दर्शन में, ये दुष्ट आत्माएँ पूरी दुनिया के देशों में (और इस प्रकार आज आपके राष्ट्र के लिए भी) चली जाती हैं, ताकि उन्हें बहकाया जा सके और उन्हें बाइबल और परमेश्वर के लोगों (मसीहियों) के विरुद्ध भड़काया जा सके। ! हम यीशु मसीह के दूसरे आगमन के जितना करीब आते हैं, उतनी ही मसीही-विरोधी राजनीति अपने उत्पीड़न के साथ, मसीही-विरोधी धर्म अपने झूठ के साथ और मसीही-विरोधी संस्कृति अपने बहकावे के साथ सक्रिय बन जाएगी! मसीह के दूसरे आगमन से ठीक पहले के अंतिम दिनों के दौरान उनकी गतिविधि सबसे अधिक हिंसक हो जाएगी!

दुष्ट आत्माओं को अक्सर "अशुद्ध" कहा जाता है, क्योंकि न केवल एक धार्मिक अर्थ में, बल्कि विशेष रूप से एक नैतिक अर्थ में, वे लोगों को विकृत करती हैं। इसलिए यह संभव है कि कई दुष्ट आत्माओं का लोगों के बीच यौन नैतिक भ्रष्टाचार पर एक मजबूत प्रभाव है, जैसे अश्लील साहित्य, व्यभिचार, वेश्यावृत्ति,

समलैंगिकता और किसी अन्य प्रकार की यौन अनैतिकता। तीसरी मसीही-विरोधी आत्मा की गतिविधियाँ, जिसे बाबुल कहा जाता है, महान वेश्या, विशाल नैतिक विकृति की दिशा में इंगित करता है।

फिर से हमें यह स्पष्ट करना चाहिए कि सारी बुराई शैतान या उसके दुष्टात्माओं से उत्पन्न नहीं होती, क्योंकि बाइबल कहती है कि सबसे बड़ी समस्या शैतान या दुष्ट आत्माएँ या यहाँ तक कि बुरी दुनिया भी नहीं है। बाइबल कहती है कि सबसे बड़ी समस्या मनुष्य का पापपूर्ण हृदय है (यिर्मयाह 17:9; रोमियों 8:5-8)!

निष्कर्ष। दुष्ट आत्माएँ या शैतान राष्ट्रों के कुछ राजनैतिक शासकों, मूर्तिपूजा करने वालों और विरोधी धर्म के झूठे शिक्षकों और यौन अनैतिक लोगों से स्वयं को जोड़ना पसंद करती हैं।

ग. दुष्ट आत्माओं का निरस्त्रीकरण

खोजें और चर्चा करें। यीशु ने दुष्ट आत्माओं को क्या किया?

1. यीशु मसीह ने सभी दुष्ट आत्माओं का निरस्त्रीकरण कर दिया।

पढ़ें कुलुस्सियों 2:14-15। ***सिखाएँ।*** "लिखित संकेतावली अपने नियमों के साथ" यहाँ विशेष रूप से पुराने नियम का औपचारिक कानून है। क्रूस पर उसकी मृत्यु से, यीशु मसीह ने न केवल व्यवस्था को पूरा किया, बल्कि एक बार में हमेशा के लिए व्यवस्था (परमेश्वर की धार्मिकता की माँग के रूप में) को *रद्द* कर दिया। कानून लोगों के अवैयक्तिक दोष लगानेवाले के रूप में कार्य करता था, क्योंकि प्रत्येक जन ने व्यवस्था का उल्लंघन किया और कोई भी व्यवस्था को नहीं रख सकता था! क्योंकि यीशु मसीह ने व्यवस्था को परमेश्वर की सही औचित्य के लिए आवश्यकता के रूप में पूरा किया, वह इस व्यवस्था को रद्द भी कर सकता था। मसीहियों को पुराने नियम की व्यवस्था और प्रत्येक दूसरे कानून से औचित्य या मुक्ति प्राप्त करने के साधन के रूप में मुक्त किया गया है! मसीही अब औपचारिक कानून और पुराने नियम के नागरिक कानूनों का पालन करने के दायित्व के तहत नहीं हैं!

"शक्तियाँ और प्रधानताएँ" पृथ्वी के चारों ओर के वातावरण में और दुनिया में बुरे अधिकारियों के लिए दुष्ट आत्माओं का उल्लेख करते हैं। क्रूस पर उसकी मृत्यु से, यीशु मसीह ने न केवल शैतान को "बाध्य" किया है, बल्कि सभी दुष्ट आत्माओं का एक बार में हमेशा के लिए "निरस्त्रीकरण" किया है। दुष्ट आत्माओं ने लोगों पर व्यक्तिगत आरोप लगाने वालों के रूप में कार्य किया था, क्योंकि यीशु मसीह को अभी तक क्रूस पर नहीं चढ़ाया गया था और इसलिए उनके पापों का अभी तक प्रायश्चित नहीं किया गया था (रोमियों 8:33; प्रकाशितवाक्य 12:10)। यीशु मसीह के महान मोचन कृत्यों द्वारा, जो उसकी मृत्यु, पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण और स्वर्ग में प्रवेश हैं (कुलुस्सियों 2:15; प्रकाशितवाक्य 12:10; इफिसियों 1:20-23), परमेश्वर ने इन दुष्ट आत्माओं का निरस्त्रीकरण किया और अपमान के लिए उन्हें बंदी (युद्ध के कैदी) के रूप में दूर करके सार्वजनिक रूप से उजागर किया! उसने अपनी विजय यात्रा में उनकी इस प्रकार अगुवाई की जैसे कि वे उसके रथ के साथ बंधी हुई थीं (अधिरोहण)! ऐसा एक बार हमेशा के लिए 2000 वर्ष पहले यीशु मसीह के पहले आगमन पर हुआ था। यीशु मसीह की विजय के माध्यम से, मसीही शैतान और उसकी दुष्ट आत्माओं पर हमेशा के लिए "जयवंत से बढ़कर" बन गए हैं (रोमियों 8:37-39)!

यीशु मसीह ने शैतान को बाँध दिया (मत्ती 12:29; प्रकाशितवाक्य 20:3) और उसकी सभी दुष्ट आत्माओं का निरस्त्रीकरण कर दिया (कुलुस्सियों 2:15)। इसका अर्थ यह नहीं है कि यीशु मसीह ने उन्हें *प्रत्येक मायने में बाँध दिया* या उन्हें *निरस्त्र* कर दिया, क्योंकि बाइबल में अन्य पद सिखाते हैं कि शैतान और उसकी दुष्ट आत्माएँ उन सभी लोगों के जीवन पर बुराई के लिए बहुत शक्तिशाली प्रभाव डालती हैं जो यीशु मसीह को अपने उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में नहीं मानते हैं। और यद्यपि शैतान बाध्य है और उसकी दुष्ट आत्माएँ निरस्त्र हैं, यहाँ तक कि मसीहियों को अभी भी परमेश्वर के पूर्ण हथियार पहने और उनके आक्रमणों का विरोध करने की आवश्यकता है (इफिसियों 6:10-18)। मसीही शैतान और उसकी दुष्ट आत्माओं का विरोध करने में सक्षम केवल इसलिए हैं (याकूब 4:7; 1 पतरस 5:8-9) क्योंकि शैतान को बाध्य किया गया है और उसकी दुष्ट आत्माओं को निरस्त्र कर दिया गया है! अवज्ञाकारी मसीही, जो पूरे आध्यात्मिक हथियारों को पहन ने की उपेक्षा करते हैं, अभी भी अपने व्यक्तिगत जीवन में गंभीर पराजयों का अनुभव करते हैं और उन्हें मसीह के न्याय का सामना करना होगा (प्रकाशितवाक्य 2:14-16,20,24)।

2. यीशु मसीह ने दुष्ट आत्माओं के प्रभुत्व से मसीहियों को बचाया।

पढ़ें कुलुस्सियों 1:13-14। ***सिखाएँ।*** "अंधकार का प्रभुत्व (यूनानी: एकजूसिया)" से तात्पर्य उस क्षेत्र से है जहाँ शैतान और उसकी दुष्ट आत्माएँ शक्ति का प्रयोग करती हैं। कुलुस्सियों 1:13 का कहना है कि परमेश्वर ने मसीहियों को एक बार हमेशा के लिए अंधकार के इस क्षेत्र से *बचाया* और उन्हें यीशु मसीह के राज्य (सत्ता के क्षेत्र) में ले आया। उसने यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के माध्यम से ऐसा किया, जो यीशु मसीह में विश्वास करने वाले सभी लोगों के लिए क्षमा और छुटकारा लाया।

यीशु मसीह "शरीर (कलीसिया) का सिर है" (कुलुस्सियों 1:18) है। वह "प्रत्येक (अच्छी और बुरी) शक्ति और अधिकार का प्रमुख भी है" जो अस्तित्व में है (कुलुस्सियों 2:10), परन्तु उसी अर्थ में नहीं जैसा कि वह कलीसिया का प्रमुख है। वह "सर्वोच्च और सर्वशक्तिमान परमेश्वर/प्रभु" (कुलुस्सियों 1:16; इफिसियों 1:22) के अर्थ में उनका प्रमुख है, ताकि उसके अलावा कोई भी अच्छा स्वर्गदूत लोगों की सहायता नहीं कर सकता और कोई दुष्ट आत्मा उन्हें नुकसान नहीं पहुँचा सकती (सीएफ। यिर्मयाह 10:5)! मसीही "उन (दूसरों में मसीह-विरोधी की आत्मा) पर जयवंत हो चुके हैं, क्योंकि जो तुम में है (पवित्र आत्मा) वह उसकी तुलना में अधिक महान है जो संसार में है" (1 यूहन्ना 4:4)।

3. यीशु मसीह लोगों के शैतान (और उसकी दुष्ट आत्माओं) के जाल से बचने का कारण बनता है।

पढ़ें 2 तीमुथियुस 2:25-26। ***सिखाएँ।*** "परमेश्वर लोगों के लिए *केवल एक बार* (अनिर्दिष्टकालीन) उमत्त बनने या उनके चेतनता में आने का कारण बनता है (शाब्दिक रूप से: उन्हें आध्यात्मिक "नशे" या कठोरता से मुक्त करना) (यूनानी: एना-नेफो) और इसलिए "शैतान और उसकी दुष्ट आत्माएँ के जाल से (बचाता) जिन्होंने उन्हें उसकी इच्छा पूरी करने के लिए जीवित (यूनानी: जो-ग्रेओ) बंदी बना लिया था। परमेश्वर लोगों को पश्चाताप (सोचने में परिवर्तन) प्रदान करके शैतान और उसके दुष्ट दलालों से लोगों को बचाता है जो उन्हें सत्य (वचन) के ज्ञान की ओर ले जाता है।

प्रत्येक मसीही, जो यीशु मसीह में रहता है और उस पर निर्भर रहना जारी रखता है, को शैतान या उसकी किसी भी दुष्ट आत्मा से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। शैतान को बाध्य किया गया है और उसकी

दुष्ट आत्माओं का निरस्त्रीकरण कर दिया गया है। वे मसीहियों को नुकसान नहीं पहुँचा सकते (1 यूहन्ना 5:18) जब तक कि मसीही परमेश्वर के प्रति अवज्ञाकारी नहीं बन जाते और इस प्रकार ये दुष्ट आत्माओं को उनका नुकसान पहुँचाने की अनुमति नहीं देते!

घ. शैतान और उसकी दुष्ट आत्माओं के विरुद्ध युद्ध

1. मसीहियों को दुष्ट आत्माओं का सामना करना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। मसीहियों को शैतान और उसकी दुष्ट आत्माओं का सामना कैसे करना चाहिए?

मसीहियों को दुष्ट आत्माओं के आक्रमणों का सामना करना चाहिए। हालाँकि शैतान और उसकी दुष्ट आत्माओं पर विजय पा ली गई है और लोगों के उपर उनकी पूर्ण शक्ति पर अंकुश लगा दिया गया है, फिर भी बाइबल सिखाती है कि मसीहियों को सतर्क रहना चाहिए और उनके विरुद्ध आध्यात्मिक युद्ध छेड़ना चाहिए! मसीहियों को इन दुष्ट आत्माओं या शैतानों से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। वे निहत्थे हैं। तथापि, उनके विरुद्ध आध्यात्मिक युद्ध को मसीह के दूसरे आगमन तक जारी रहना होगा, क्योंकि ये दुष्ट आत्माएँ या शैतान अभी भी यीशु मसीह के बिना लोगों को बहुत नुकसान पहुँचाते हैं और वे उन मसीहियों को भी नुकसान पहुँचाने का प्रयास करते हैं जिन्होंने अपने आध्यात्मिक हथियार नहीं पहने हैं।

(1) मसीहियों को पहले स्वयं को परमेश्वर को समर्पित करना चाहिए। फिर शैतान का सामना करना चाहिए।

पढ़ें याकूब 4:7-8। याकूब मसीहियों से सबसे पहले परमेश्वर के निकट आने, परमेश्वर के समक्ष अपने हृदय को शुद्ध करने और परमेश्वर को समर्पण करने का आग्रह करता है। तब उन्हें शैतान का सामना करना चाहिए। परमेश्वर वादा करता है कि शैतान उनके पास से भाग जाएगा!

(2) मसीहियों को सबसे पहले आत्म-नियंत्रित, सतर्क और मसीही विश्वास में दृढ़ रहना चाहिए। फिर शैतान का सामना करना चाहिए।

पढ़ें 1 पतरस 5:8-9। प्रेरित पतरस ने चेतावनी दी है कि शैतान हर समय दहाड़ते हुए शेर के रूप में मसीहियों के चारों ओर घूमता है, हर समय उन पर आक्रमण करने के लिए कमजोरी को खोजता है। इसलिए मसीहियों को पहले एक आत्म-नियंत्रित जीवन जीना चाहिए, शैतान के आक्रमणों के विरुद्ध सतर्क रहना चाहिए और अपने मसीही विश्वास दृढ़ बने रहना चाहिए (यीशु मसीह का शिष्य बनकर)। फिर उन्हें शैतान और उसकी दुष्ट आत्माओं के आक्रमणों का सामना करना चाहिए। मसीहियों को पता होना चाहिए कि दुनिया भर में अन्य मसीही इसी प्रकार के संघर्ष और पीड़ा से गुजरते हैं।

(3) मसीहियों को पहले कड़वाहट और क्रोध से छुटकारा पाना चाहिए। तब शैतान को फिर से पैर जमाने न दें।

पढ़ें इफिसियों 4:26-27,31। प्रेरित पौलुस मसीहियों से प्रत्येक प्रकार की दुर्भावना के साथ-साथ कड़वाहट (क्षमा करने की अनिच्छा) और क्रोध (उनके विरुद्ध जिन्होंने आपके साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार किया), झगड़ना और अपवाद (कुछ लोगों के लिए बुरा बोलना) से छुटकारा पाने का आग्रह करता है। केवल इस प्रकार से आप अपने जीवन में शैतान को पैर जमाने (अपने बचाव में एक छेद) देने से बच सकते हैं।

अन्य चीजें जो शैतान और दुष्ट आत्माओं को आपके जीवन में पैर जमाने देंगी हैं- एक निषिद्ध सम्बन्ध को मनोरंजित करना, बुरी गतिविधि में शामिल होना या एक प्रश्नयोग्य स्थान पर जाना।

(4) सबसे पहले निश्चिन्त हो जाएँ कि पवित्र आत्मा आप में रहता है। फिर आत्माओं को परखें कि वे परमेश्वर की ओर से हैं या नहीं।

पढ़ें 1 यूहन्ना 4:1-6; 2 यूहन्ना 7-11। प्रेरित यूहन्ना मसीहियों से यह विश्वास करने का आग्रह करता है कि उनमें रहने वाला पवित्र आत्मा सत्य का आत्मा है। इसलिए मसीहियों को लोगों के भीतर झूठ बोलने वाली आत्माओं पर विश्वास नहीं करना चाहिए, जो यह स्वीकार नहीं करती हैं कि यीशु मसीह परमेश्वर है जिसने मानव स्वभाव को ले लिया था (यूहन्ना 1:1,14) या जो यीशु मसीह की शिक्षाओं के अनुसार जीवित नहीं बिताती हैं। कई झूठे शिक्षक दुनिया में चले गए हैं (मत्ती 24:24)। मसीहियों को उनको परखना चाहिए और उनके झूठ पर विश्वास करने से इनकार करना चाहिए। जबकि परमेश्वर ने कुछ मसीहियों को आत्माओं के बीच अंतर करने का वरदान दिया है (1 कुरिन्थियों 12:10), उसने सभी मसीहियों को सत्य को जानने और समझने के लिए बाइबल दी है (यूहन्ना 17:17; 2 तीमुथियुस 3:16-17)!

मसीहियों को झूठे शिक्षकों का सामना करना चाहिए, क्योंकि वे दुष्ट आत्माओं के झूठे दलाल होते हैं। उन्हें उनकी बातों को या उनकी झूठी शिक्षाओं को सुनने से इनकार करने के द्वारा उनका सामना करना चाहिए। उन्हें विशेष रूप से उनकी झूठी पुस्तकों और पत्रिकाओं को पढ़ने से मना करना चाहिए! और उन्हें अपने घरों में स्वागत करने में मना करना चाहिए।

2. मसीहियों को दुष्ट आत्माओं के विरुद्ध युद्ध छेड़ना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। मसीहियों को कैसे शैतान और उसकी दुष्ट आत्माओं के विरुद्ध युद्ध लड़ना चाहिए? मसीहियों को आध्यात्मिक हथियारों के साथ शैतान और उसकी दुष्ट आत्माओं के विरुद्ध युद्ध छेड़ना चाहिए।

(1) ज्वलंत तीरों को बुझाने और आक्रमणों का मुकाबला करने के लिए आध्यात्मिक हथियारों का उपयोग करें।

पढ़ें इफिसियों 6:16-18। यह कहता है, "विश्वास की ढाल उठा लो, जिसके साथ तुम शैतान के सभी जलते हुए तीरों को बुझा सकते हो। ... आत्मा की तलवार ले लो, जो परमेश्वर का वचन है। और सभी अवसरों पर आत्मा में प्रार्थना करो।"

मसीहियों को विशेष रूप से विश्वास, विशिष्ट बाइबल पद और प्रार्थना का उपयोग शैतान और उसकी दुष्ट आत्माओं के विरुद्ध आध्यात्मिक युद्ध छेड़ने के लिए करना चाहिए। "शैतान के धधकते तीर" मसीहियों के शरीर, दिमाग और आत्मा पर उसके आक्रमण हैं, उदाहरण के लिए, उसके झूठ और गलत आरोप। तथापि, मसीह ने मसीहियों को अपने वादों पर विश्वास करने को एक ढाल के रूप में दिया हैं, जो शैतान के ज्वलंत तीरों को *बुझाने* के लिए हैं। मसीही मानते हैं कि परमेश्वर के वचन और वादे सच्चे हैं और वह इस आश्वासन के आधार पर कार्य करता है। मसीही विशिष्ट बाइबल पद (उपयुक्त बाइबल लेख) (यूनानी: रेमा) का उपयोग करते हैं (उदाहरण के लिए: मत्ती 4:4) शैतान के विशिष्ट आक्रमणों का सामना करने के लिए। और मसीही यीशु मसीह पर अपनी पूर्ण निर्भरता दिखाने के लिए प्रार्थना करते हैं। इसीलिए मसीहियों

को अपनी शक्ति या ज्ञान के आधार पर पवित्र आत्मा के माध्यम से परमेश्वर के वचन और परमेश्वर की उपस्थिति के बिना दुष्ट आत्माओं के आक्रमणों का सामना करने का प्रयास नहीं करना चाहिए।

आध्यात्मिक युद्ध का पहला उद्देश्य विजय प्राप्त करना नहीं है, बल्कि टिके रहना है (इफिसियों 6:13)।

(2) आध्यात्मिक हथियारों का उपयोग गढ़ों (गर्व के अभिकथनों और दावों) को ध्वस्त करने के लिए और इस प्रकार बंदियों को बचाने के लिए करें।

पढ़ें 2 कुरिन्थियों 10:3-5। इसमें कहा गया है, "यद्यपि हम संसार में चलते फिरते हैं, तौभी संसार के अनुसार युद्ध नहीं छेड़ते (शरीर में)। हथियार जिनसे हम लड़ते हैं वे सांसारिक नहीं हैं। पर गढ़ों को ढा देने के लिये परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं। सो हम कल्पनाओं को, और प्रत्येक ऊँची बात को, जो परमेश्वर की पहिचान के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं; और प्रत्येक विचार को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं।" मसीहियों को शैतान और उसकी दुष्ट आत्माओं के विरुद्ध आध्यात्मिक युद्ध करने के लिए बाइबल का ज्ञान, सत्य और तर्क का उपयोग करना चाहिए।

आध्यात्मिक युद्ध का दूसरा उद्देश्य दुष्ट आत्माओं के गढ़ों को ध्वस्त करना है। दुष्ट आत्माओं के ये "गढ" उनके झूठे तर्क, दिखावे और दावे हैं।

आध्यात्मिक युद्ध का तीसरा उद्देश्य दुनिया में उन लोगों को बचाना है, जिन्हें शैतान और दुष्ट आत्माओं की इच्छा पूरी करने के लिए जिंदा पकड़ लिया गया है (2 तीमुथियुस 2:25-26)।

3. कुछ मसीहियों के पास दुष्ट आत्माओं को निकालने का अधिकार और शक्ति है।

हालाँकि, मसीहियों के पास प्रार्थना में और परमेश्वर के वचन की घोषणा करने में अधिकार और शक्ति है, यीशु मसीह ने कुछ लोगों (विशेषकर उनके प्रेरितों) को शैतानों (दुष्ट आत्मा) को बाहर निकालने के लिए अपना अधिकार और शक्ति दी है।

पढ़ें मत्ती 10:1,8 (प्रेरित); मरकुस 16:9-20 (मसीह के शिष्य); लुका 10:18-20 (मसीह के शिष्य); प्रेरितों के काम 5:16 (प्रेरितों); 8:7 (प्रचारक फिलिप्पुस); 13:6-12 (प्रेरित पौलुस); 16:18 (प्रेरित पौलुस); 26:17-18 (प्रेरित पौलुस); 2 कुरिन्थियों 12:12 (प्रेरित); इब्रानियों 2:3-4 (मसीह के चेले)।

सुसमाचार की पुस्तकों में मसीह ने अपने बारह शिष्यों (बाद में प्रेरित कहलाए गए) और अपने शिष्यों के एक बड़े समूह (72) को यह अधिकार दिया। प्रेरितों के काम की पुस्तक में मसीह ने यह अधिकार केवल अपने प्रेरितों, प्रेरित पौलुस और प्रचारक फिलिप्पुस को दिया। ठीक उसी प्रकार जैसे कि सुसमाचार की पुस्तकों में, उन्होंने यीशु मसीह के नाम से दुष्ट आत्माओं को फटकार लगाई और दुष्ट आत्माओं ने लोगों को छोड़ दिया। नए नियम की पत्रियों में यह सिखाया गया है कि यीशु मसीह ने अपने प्रेरितों को "यीशु मसीह के प्रेरित के चिन्ह" के रूप में यह अधिकार और शक्ति दी थी (2 कुरिन्थियों 12:12; इब्रानियों 2:3-4)।

मरकुस 16:9-20 मरकुस रचित सुसमाचार का एक मूल हिस्सा नहीं है। यूनानी, लातिनी और सीरियाई में सबसे पुरानी और सबसे विश्वसनीय पांडुलिपियाँ बताती हैं कि मरकुस रचित सुसमाचार मरकुस 16:8 के साथ समाप्त हुआ। हमें नहीं पता कि मरकुस ने कभी अपनी सुसमाचार की पुस्तक पूरा किया और यदि

नहीं, तो क्यों नहीं। और यदि उसने अपनी सुसमाचार की पुस्तक को पूरा किया, तो हमें नहीं पता कि अंतिम भाग का क्या हुआ और इसमें कितने पद शामिल थे।

बाद के एक लेखक ने अपने सुसमाचार के अंत में मरकुस 16:9-20 को अन्य सुसमाचारों और प्रेरितों के काम के दिलचस्प सारांश के रूप में लिखा। मरकुस 16:8-20 अपने पुनरुत्थान के पश्चात यीशु मसीह के कुछ बार दिखने, उसके अधिरोहण और अपने प्रेरितों के माध्यम से अपने काम जारी रखने का एक सारांश है।

- मरकुस 16:9-11 यूहन्ना 20:11-18 का सारांश है, जो मरियम मगदलीनी को यीशु मसीह का प्रकटीकरण है।
- मरकुस 16:12-13, लूका 24:13-35 का एक सारांश है, जो इम्माऊस के रास्ते में यीशु मसीह का दो व्यक्तियों को प्रकट होना है।
- मरकुस 16:14-18 मत्ती 28:16-20 का एक सारांश है, जो यीशु मसीह का गलील में एक पहाड़ पर उसके ग्यारह चेलों को प्रकट होना है।
- मरकुस 16:19-20, प्रेरितों के काम 1:9-11 का एक सारांश है, जो यीशु मसीह का अधिरोहण और उनके शिष्यों के माध्यम से उनकी सेवकाई का जारी रहना है।

बाइबल के प्रकाश में मरकुस 16:17-20 यीशु मसीह के बारह शिष्यों को संदर्भित करता है। यह वे थे जिन्होंने पहले विश्वास नहीं किया (मरकुस 16:11,14)। परन्तु जब उन्होंने विश्वास किया, तो प्रभु ने उनके शब्दों की पुष्टि उनके चिन्हों के साथ की (मरकुस 16:17,20; मत्ती 10:1,8; लूका 10:18-20; 2 कुरिंथियों 12:12, प्रेरितों के काम 9:13-16 से भी तुलना करें)।

मरकुस 16:9-20 मसीही विश्वास के लिए बाध्यकारी है और केवल उसी सीमा तक अभ्यास करना है, जहाँ तक बाइबल के बाकी हिस्सों से सहमत रहे। क्योंकि "साँपों को उठाना" और "घातक जहर पीना" (मरकुस 16:18) बाकी बाइबल में कहीं भी समर्थित नहीं है, हमें इनको परमेश्वर के वचन में साधारण न होने के रूप में मानना चाहिए, बल्कि अप्रमाणिक रूप में जिसकी प्रामाणिकता संदेहास्पद है और जिसे बाद में किसी ने मरकुस रचित सुसमाचार के अंत में जोड़ा जैसे कि यह परमेश्वर का वचन है।

इस प्रकार, दुष्ट आत्माओं को बाहर निकालने के द्वारा उनकी शक्ति को तोड़ने की सेवकाई के दुरुपयोग को रोकने के लिए, इस सेवकाई को कलीसिया में प्राचीनों की परिषद के नेतृत्व और पर्यवेक्षण के तहत ही किया जाना चाहिए।

4. सभी मसीहियों को आध्यात्मिक युद्ध में अधिकार और शक्ति प्राप्त है।

(1) परमेश्वर के वचन की घोषणा में अधिकार और शक्ति।

मसीह अभी भी लोगों को दुष्ट आत्माओं की शक्ति से मुक्त करने के लिए मसीहियों को नियुक्त करता है। ***पढ़ें*** मत्ती 12:29-30; लुका 10:18-20; कुलुस्सियों 1:13-14; 2 तीमुथियुस 2:25-26।

मसीहियों को न केवल शैतान का *सामना* करना चाहिए, बल्कि *उन क्षेत्रों पर भी आक्रमण करना चाहिए जहाँ दुष्ट आत्माओं के गढ़* हैं। उनकी प्रार्थना और सुसमाचार की घोषणा के माध्यम से मसीही मसीह के उपकरण

हैं जिनके माध्यम से लोगों को शैतान के प्रभुत्व के अंधेरे क्षेत्रों से मुक्त किया जाता है, और मसीह के राज्य (राजपद) में लाया जाता है (कुलुस्सियों 1:13-14)। मसीह ने देखा, "शैतान का आसमान (आकाश) से *हमेशा के लिए एक बार*(अनिर्दिष्टकाल काल) पतन (यूनानी: पिप्टो, पेसोंटा) और "वह अब नीचे वह पटका हुआ नीचे पड़ा रहता है (पूर्ण काल) (यूनानी: पिप्टो, पेप्टोकोटा), पृथ्वी पर" (प्रकाशितवाक्य 9:1)! इसलिए मसीही भी आध्यात्मिक युद्ध लड़ने और जीतने में सक्षम हैं!

दुनिया में दुष्ट आत्माओं का सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य, भले ही वे एक विशिष्ट "क्षेत्र" या "गढ़" की रक्षा करें या न करें, यीशु मसीह के सुसमाचार के प्रचार और बाइबल के परमेश्वर की शानदार वास्तविकता को रोकना है (लुका 8:12)! परन्तु जब यीशु मसीह मसीहियों की प्रार्थना और नियुक्त सेवकाई कार्य के उत्तर में इन दुष्ट आत्माओं को "बाँधना" जारी रखते हैं (मत्ती 12:29-30), तो ये दुष्ट आत्माएँ लोगों पर अपनी पकड़ खो देती हैं और मसीह का राज्य (राजपद) उन्हें पकड़ लेता है!

(2) प्रार्थना में अधिकार और शक्ति।

- दानिय्येल की प्रार्थना नहीं, बल्कि संप्रभु परमेश्वर की जिसने दुष्ट आत्माओं के विरुद्ध कार्य किया।

पढ़ें दानिय्येल 9:1-3; 10:1,12-14। यिर्मयाह की किताब से दानिय्येल समझ गया कि इस्राएल 70 वर्ष तक निर्वासन में रहेगा। दानिय्येल ने परमेश्वर के सामने स्वयं को दीन बना लिया था और इस्राएल की इस संकटपूर्ण स्थिति के विषय में परमेश्वर से प्रार्थना की थी। उसने इस्राएल के पाप का अंगीकार कर लिया था और स्वीकार किया था कि परमेश्वर का इस्राएल के लिए परमेश्वर का दंड सही था। उसने परमेश्वर से इस्राएल और यरूशलेम पर दया करने की विनती की। परमेश्वर ने उसे एक संप्रभु तरीके से उत्तर दिया और एक दर्शन में उस पर प्रकट किया कि निकट भविष्य में क्या होगा।

दानिय्येल 9 और 10 में दानिय्येल की प्रार्थना इस्राएल की स्थिति को समझने के विषय में थी न कि शैतान राजकुमारों को बाँधने के विषय में थी। स्वर्गदूत ने दानिय्येल को समझाया कि निकट भविष्य में क्या होगा, हवा में आध्यात्मिक युद्ध और उसके परिणाम के विषय में। वह कुछ भी नहीं था जो दानिय्येल या विश्वास करने वाले यहूदियों ने किया जिसने उनके क्षेत्र में शैतान राजकुमारों को बाँधा और उन पर विजय प्राप्त की। यह बल्कि संप्रभु परमेश्वर था, जिसने अपने स्वर्गदूत मिकाइल को शैतान राजकुमारों को बांधने और उन पर विजय प्राप्त करने और इस प्रकार अपने लोगों के साथ अपनी संप्रभु योजना को पूरा करने के लिए भेजा!

हालाँकि पृथ्वी पर संघर्ष इस प्रकार था कि उचित संदेह था कि क्या परमेश्वर के लोग संघर्ष में बच पाएंगे, दानिय्येल के लिए परमेश्वर के दर्शन का उद्देश्य उसे प्रोत्साहित करना था। परमेश्विर ने दानिय्येल को यह दृढ़ आश्वासन दिया कि पृथ्वी पर स्थिति चाहे कितनी भी हताश क्यों न हो, परमेश्वर हमेशा घटनाओं पर नियंत्रण में रहेगा और आध्यात्मिक युद्ध का परिणाम पहले ही निर्धारित हो चुका है! दानिय्येल 9 और 10 का उद्देश्य मसीहियों को यह सिखाना नहीं है कि उन्हें आध्यात्मिक युद्ध में क्या करने की आवश्यकता है, बल्कि मसीहियों को उससे प्रोत्साहित करने के लिए है कि परमेश्वर ने पहले से ही क्या किया है! निसंदेह, मसीही दानिय्येल के अच्छे उदाहरण का अनुसरण कर सकते हैं, प्रार्थना कर सकते हैं और अपने राष्ट्र के पापों को स्वीकार कर सकते हैं, परन्तु बाइबल का यह वचन हमें तथाकथित "क्षेत्रीय (दुष्ट) आत्माआ" के विरुद्ध रणनीतिक प्रार्थना की विधि नहीं सिखाता है!

- मसीहियों की रणनीतिक प्रार्थना नहीं, बल्कि परमेश्वर के संप्रभु कार्य दुष्ट आत्माओं को "बाँध" देते हैं।

पढ़ें प्रकाशितवाक्य 3:7-9; यशायाह 14:24,27; मत्ती 28:18। वह जो जगहों (क्षेत्रों) में बंद द्वार खोलता है, वह यीशु मसीह है और मसीही या उनकी प्रार्थनाएँ नहीं! निम्नलिखित विचार बाइबल से नहीं हैं:

- कुछ लोगों का मानना है कि क्योंकि कोई भी दुष्ट आत्माओं का विरोध नहीं करता है, ये क्षेत्रीय आत्माएँ वह करने के लिए स्वतंत्र हैं जो वे चाहती हैं। बाइबल इस धारणा का समर्थन नहीं करती है।

- कुछ लोगों का मानना है कि मसीही इस क्षेत्र में कोई सुसमाचार प्रचार या नियुक्त सवकाई कार्य नहीं कर सकते हैं इससे पहले कि वे इन क्षेत्रीय आत्माओं को "बाध्य" नहीं कर देते हैं। बाइबल इस धारणा का समर्थन नहीं करती है।

- कुछ लोगों का मानना है कि एक विशेष स्थान (देश, क्षेत्र) को उसके पाप और उन में दुष्ट आत्माओं (देवताओं) के कारण शापित किया जाता है और इस क्षेत्र को सुसमाचार प्रचार या नियुक्त सवकाई कार्य से पहले मुक्त करने की आवश्यकता है। बाइबल यह नहीं सिखाती है।

- कुछ लोगों का मानना है कि मसीहियों को सबसे पहले शैतानी आत्माओं की पहचान (नामों, इरादों और गढ़ों का निदान) करनी चाहिए इससे पहले कि वे उनके विरुद्ध प्रार्थना करें। इसके पश्चात उन्हें हो सके तो इन शैतानों को इनके नाम लेकर उसी क्षेत्र के भीतर यीशु मसीह के नाम से "बाँधना" और "बाहर निकालना" चाहिए। बाइबल यह नहीं सिखाती है।

दुष्ट आत्माओं और उनके शैतान राजकुमारों को "बाँधने" के संबंध में उपरोक्त विचार इन दुष्ट आत्माओं की शक्ति को अधिक आंकते हैं और यीशु मसीह की विजय उसकी संप्रभु शक्ति को कम आंकते हैं! वे मसीहियों की जिम्मेदारियों और प्रार्थनाओं को भी अधिक आंकते हैं और यीशु मसीह के उद्धार के पहले से हि पुरे किए गए कार्य और साथ-साथ इस आधार पर उसके निरंतर कार्य को कम आंकते हैं! बाइबल "रणनीतिक प्रार्थना की विधि" नहीं सिखाती है। यह मसीहियों की रणनीतिक प्रार्थना नहीं है, बल्कि परमेश्वर के संप्रभु कार्य हैं जो दुष्ट आत्माओं को "बाँधते" हैं।

बाइबल सिखाती है कि दुष्ट आत्माओं और उनके शैतान राजकुमारों के विपरीत, यीशु मसीह के माध्यम से संप्रभु परमेश्वर सभी जगहों (क्षेत्रों), इतिहास की सभी घटनाओं और पृथ्वी पर सभी लोगों (गैर-मसीहीयों सहित) को नियंत्रित करता है (भजन संहिता 24:1,10; यशायाह 14:24,27; मत्ती 28:18; प्रेरितों के काम 17:26-27; इफिसियों 1:21-22; कुलुस्सियों 2:10) 1।

बाइबल यह नहीं सिखाती है कि मसीही अपनी प्रार्थना के माध्यम से सुसमाचार की घोषणा के लिए बंद द्वार खोलते हैं, बल्कि यह कि यीशु मसीह के पास चाबियाँ हैं और वह एक संप्रभु तरीके से दुनिया में सभी बंद द्वारों को खोलता है और सुसमाचार को घोषित करने के अवसर बनाता है। "मैंने तुम्हारे सामने एक खुला द्वार रखा है जिसे कोई बंद नहीं कर सकता!" (प्रेरितों 14:27; 1 कुरिन्थियों 16:9; कुलुस्सियों 4:2-4; प्रकाशितवाक्य 3:7-8)!

- मसीहियों की प्रार्थनाएँ नहीं, बल्कि मसीहियों की प्रार्थनाओं हेतु परमेश्वर के उत्तर जो दुष्ट आत्माओं की शक्ति को तोड़ते हैं और बंद द्वारों को खोलते हैं।

पढ़ें मत्ती 12:29; 2 कुरिन्थियों 10:3-5; इफिसियों 6:10-11; कुलुस्सियों 4:2-4। आध्यात्मिक युद्ध में प्रार्थना का क्या स्थान है? बाइबल सिखाती है कि मसीहियों को प्रार्थना करने के लिए स्वयं को समर्पित करना चाहिए ताकि संप्रभु परमेश्वर अपने समय में और अपने तरीके से बंद द्वार खोले और सुसमाचार का प्रचार करने के अवसर पैदा करे! प्रार्थना बंद दरवाजों को खोलने का साधन नहीं है, बल्कि परमेश्वर को बंद द्वार खोलने के लिए कहने का साधन है यदि यह उसकी संप्रभु इच्छा है (लूका 22:42)! प्रार्थना एक मानव अधिकार या शक्ति नहीं है जो स्वचालित रूप से संप्रभु (सर्वशक्तिमान) परमेश्वर के हाथ को हिलाती है उदाहरण के लिए एक दुष्ट आत्मा को बाँधों, एक दुष्ट आत्मा को बाहर निकालो या एक बंद दरवाजा खोलो! यह एक अभिमानी विचार है और मनुष्य को परमेश्वर से अधिक शक्तिशाली बना देगा! बाइबल इस विचार के लिए कोई आधार नहीं देती है। प्रार्थना बल्कि लोगों का खुला और खाली हाथ है जो परमेश्वर के हाथ से प्राप्त करता है जब उसने संप्रभु तरीके से निर्धारित कर दिया हो और देने के लिए प्रसन्न हो!

बाइबल सिखाती है कि मसीहियों को परमेश्वर के पूर्ण हथियार पहने रखने चाहिए ताकि वे (मसीही) शैतान की चालाक चालों के विरुद्ध खड़े रह सकें, जब वे प्रार्थना कर रहे हों, बाइबलका प्रचार कर रहे हों और पृथ्वी पर प्रत्येक स्थान में जी रहे हों जैसे बाइबल सिखाती है! और बाइबल सिखाती है कि क्रूस पर मसीह के उद्धार के पूर्ण कार्य के आधार पर, यीशु मसीह दुष्ट आत्माओं और उनके शैतान राजकुमारों को बाँधना जारी रखेगा, पृथ्वी पर प्रत्येक स्थान में बंद द्वार खोलेगा और लोगों को एक संप्रभु तरीके से स्वयं की ओर आकर्षित करेगा (परिवारों, विभिन्न धर्मों, कस्बों, देशों) (यूहन्ना 12:31-32)। वह निश्चित रूप से मसीहियों की प्रार्थना और नियुक्त सेवकाई कार्य के उत्तर में भी ऐसा करता है!

बाइबल का परमेश्वर अपनी शक्ति (जो कि मसीह का आत्मा है) जो हमारे भीतर कार्य करने में लगा हुआ है (इफिसियों 3:20) के अनुसार हम जितना माँगते हैं या कल्पना करते हैं, उससे कहीं अधिक करने में सक्षम है!

(3) विश्वास में अधिकार और शक्ति।

पढ़ें मत्ती 6:9-10; 18:19; लुका 22:42; यूहन्ना 14:13; याकूब 4:15। प्रार्थना के संबंध में विश्वास का क्या स्थान है?

परमेश्वर के वादों में विश्वास के कारण मसीही विश्वास के साथ प्रार्थना करते हैं और धैर्यपूर्वक परमेश्वर के उत्तरों की प्रतीक्षा करते हैं।

मत्ती 18:19 में यीशु मसीह वादा करता है, "यदि तुम में से दो पृथ्वी पर किसी भी माँगी चीज (माँगने की इच्छा रखते हैं) के विषय में सहमत होते हैं (यूनानी: एइटीओ), तो वह तुम्हारे लिए स्वर्ग में मेरे पिता द्वारा किया जाएगा।" और यूहन्ना 14:13 में वह वादा करता है, "मैं वो करूँगा जो भी तुम मेरे नाम से माँगोगे।" इस प्रकार के वादे मसीहियों को आत्मविश्वास और सच्चाई के साथ प्रार्थना के स्थान पर आने में सहायता करते हैं। मसीहियों को साहस और प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है जब वे परमेश्वर के वचन को घोषित करने और आध्यात्मिक युद्ध लड़ने के अवसरों के साथ खुले द्वारों के लिए प्रार्थना करते हैं। ये वादे वादा करते हैं कि परमेश्वर जो सब कुछ करने में सक्षम है और जो कुछ भी हमारे लिए अच्छा है उसे रोकता नहीं है, हमारी सभी प्रार्थनाओं को सुनेगा और उनका उत्तर देगा!

---

[1] मसीह में मसीहियों के पास जो परिपूर्णता है, वह शैतानों को बाहर निकालने के उनके अधिकार का संदर्भ नहीं है, परन्तु यीशु मसीह स्वयं हैं और उनके उद्धार का पूरा काम जो कि मसीही की जरूरत के सभी चीजों के स्रोत के रूप में है (मत्ती 6:33; यूहन्ना 15:5; इफिसियों 1:3)। यह परिपूर्णता मानव दर्शन (विज्ञान), मानवीय परंपराओं या धार्मिक कानूनों (खतना सहित औपचारिक कानून) में नहीं पाई जा सकती है (कुलुस्सियों 2:6-15)।

परन्तु ये वचन एक चीज को प्रोत्साहन या अनुमति नहीं देते हैं, कि हमें जिद के साथ प्रार्थना करनी चाहिएकि हम जानते हैं कि क्या सही है और यह की कि हमारी इच्छा अवश्य पूरी की जानी चाहिए! परमेश्वर के वादे मानव अहंकार को बढ़ावा देने का इरादा नहीं रखते हैं।

प्रार्थना में विश्वास का सार आत्मविश्वास के साथ प्रार्थना करना है, फिर परमेश्वर की संप्रभु इच्छा के लिए अपेक्षा के साथ प्रतीक्षा करना और यह स्वीकार करना कि परमेश्वर अन्यथा निर्णय ले सकता है। याकूब 4:15 सिखाता है कि जीवन और प्रार्थना का सार है, "मेरी इच्छा नहीं है, परन्तु आपकी इच्छा पूरी हो जाए" (लूका 22:42)। यीशु सिखाता है कि यह स्वभाव हमारी सभी प्रार्थनाओं में आवश्यक है। वह सिखाता है, "तुम्हें रीति प्रार्थना करनी चाहिए, 'तेरा नाम पवित्र माना जाए; तेरा राज्य (राजपद) आए; तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है वैसे हि पृथ्वी पर भी हो' (मत्ती 6:9-10)!" इसलिए, "विश्वास की प्रार्थना" में, हमारा विश्वास यह नहीं है कि हमें प्रतीति है कि परमेश्वर स्वतः वही करेगा जो हमने माँगा है या उसने क्या वादा किया है, परन्तु हम अपने संप्रभु, विश्वयोग्य और प्रेम करनेवाले परमेश्वर की इच्छा पर भरोसा करते हैं। इस कारण से यह है कि मसीहियों को अपनी सभी प्रार्थनाओं में कहना चाहिए "तेरी इच्छा पूरी हो जाए!"

प्रत्येक बार जब हम मसीही प्रार्थना करते हैं, "तेरी (सिद्ध) इच्छा पूरी हो जाए!", हम अपनी प्रार्थनाओं से सभी संभव मानवीय सीमाओं (असिद्धताओं) को दूर करते हैं! किसी भी क्षेत्र (देश, शहर, लोगों या व्यक्तियों का समूह) में वास्तविक स्थिति का हमारा ज्ञान हमेशा सीमित होता है! हमारे प्रस्तावित समाधान और परमेश्वर की संप्रभुता के विषय में हमारी समझ हमेशा सीमित होती है! कभी-कभी हम अपनी प्रार्थनाओं पर अपने ज्ञान के द्वारा एक सीमा निर्धारित करते हैं कि क्या किया जाना चाहिए। कभी-कभी हम अपनी प्रार्थनाओं पर अपने प्रस्तावों से एक सीमा लगाते हैं कि क्या जरूरतों को पूरा करेंगे। और कभी-कभी हम अपनी भावना से अपनी प्रार्थनाओं पर एक सीमा लगाते हैं कि किसी विशेष परिस्थिति के लिए सबसे अच्छा क्या है। परन्तु जब आप प्रार्थना करते हैं, "मेरी इच्छा नहीं, परन्तु तेरी पूरी ही जाए" यह निर्बलता या संदेह का संकेत नहीं है, बल्कि ताकत और विश्वास का प्रतीक है! तब आप अपनी प्रार्थना पर कोई प्रतिबंध नहीं लगाते हैं, बल्कि इसे सभी मानवीय सीमाओं और सांसारिक प्रतिबंधों से ऊपर उठाते हैं! याचिका, "तेरी इच्छा पूरी हो जाए", क्षेत्र, स्थिति, लोगों के समूह या व्यक्ति को स्पष्टोक्ति से परमेश्वर और उसके असीम ज्ञान, प्रेम और शक्ति के हाथों में रख देता है। एक क्षेत्र, एक स्थिति, लोगों के एक समूह या एक व्यक्ति को परमेश्वर के हाथों में छोड़ने के इलावा कोई अन्य सुरक्षित स्थान नहीं है! "पिता, आपके हाथों में मैं अपनी आत्मा सौंपता हूँ" (लूका 23:46)। और किसी भी समस्या का कोई भी समाधान उससे बेहतर, अधिक ठीक बैठनेवाला, अधिक लाभदायक और उत्तर या समाधान से अधिक महिमामय है नहीं है जो परमेश्वर के दिमाग में है! "परमेश्वर की शांति, जो सारी समझ से पार है, आपके दिलों और मसीह यीशु में आपके मन की रक्षा करेगी" (फिलिप्पियों 4:6-7)।

प्रकाशितवाक्य 8:3-5 सिखाता है कि पृथ्वी पर हमारी सीमित और *असिद्ध* प्रार्थनाएँ हमारे लिए स्वर्ग में मसीह की *सिद्ध* प्रार्थना की धूप के साथ मिश्रित होती हैं (रोमियों 8:34; इब्रानियों 7:25)। यही कारण है कि हमारी सीमित और असिद्ध प्रार्थनाएँ हमेशा बिलकुल सिद्ध रूप में परमेश्वर के सिंहासन तक पहुँचती हैं! वह हमेशा हमारी (मसीहियों) की सहायता करने में दया और कृपा प्रदान करता है, ठीक उसी समय जब

हमें इसकी आवश्यकता होती है (इब्रानियों 4:16)। परमेश्वर हमेशा हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देते हैं, परन्तु ऐसा करने से नहीं, जो हमारी असिद्ध प्रार्थनाएँ सुझाती हैं, परन्तु वैसा करने से जो उसकी सिद्ध इच्छा ने हमारे लिए योजना बनाई है!

5. सभी मसीहियों को आखिरकार शैतान और उसकी बुरी आत्माओं पर पूरी जीत हासिल है।

पढ़ें प्रकाशितवाक्य 16:13-16 और 20:7-10। ***सिखाएँ***। मसीह के दूसरे आगमन से ठीक पहले, महान क्लेश के दौरान, शैतान और उसकी दुष्ट आत्माएँ परमेश्वर के विरुद्ध जोर से विद्रोह को बढ़ाएँगे। तथापि, दूसरे आगमन पर, यीशु मसीह उन सभी को नरक में फेंक देगा, जहाँ से वे कभी नहीं निकलेंगे और जहाँ उन्हें दिन और रात हमेशा और हमेशा के लिए सताया जाएगा (प्रकाशितवाक्य 20:15)!